प्रथम अध्याय

पत्रकारिता की अवधारणा, अर्थ एवं स्वरूप

पत्रकारिता समाज में ऊर्जा भरने का एक आक्रामक साधन है। पत्रकारिता सूचना देती है और दिशा निर्देश भी करती है। हमारे देश में पत्रकारिता को लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ के रूप में माना जाता है, क्योंकि यह जन–जन की अभिव्यक्ति को मुखर रूप से व्यक्त करने का जनतांत्रिक तरीका है।

'' परिस्थितियों के अध्ययन, चिन्तन–मनन और आत्माभिव्यक्ति की प्रवृत्ति तथा सब जनहिताय सब जनसुखाय के प्रति व्यग्रता ने पत्रकारिता को जन्म दिया ।'' [*1]

पत्रकारिता की परिभाषा :

अंग्रेज़ी शब्द 'जर्नलिज़्म' का हिन्दी रूपांतर है 'पत्रकारिता'। 'जर्नलिज़्म' शब्द 'जर्नल' से बना है, जिसका शब्दिक अर्थ ''दैनिक'' होता है। प्रतिदिन की गतिविधियों का विवरण 'जर्नल' में रहता है। जो व्यक्ति समाचार प्राप्त करता है, तैयार करता है और उसे प्रकाशित करता है, वह पत्रकार कहलाता है और पत्रकारिता पत्र–पत्रिकाओं के लिए समाचार, लेख आदि एकत्रित तथा संपादित करने, प्रकाशन के आदेश आदि देने का कार्य है।

'' पत्रकारिता वह विधा है, जिससे पत्रकारों के कार्यों, कर्त्तव्यों का विवेचन किया जाता है, जो अपने युग और अपने संबंध में लिखा जाए, वही पत्रकारिता है। ''[*2]

हर्बट ब्रकर के अनुरूप '' पत्रकारिता वह माध्यम है जिसके माध्यम से हम अपने मस्तिष्क में दुनिया के बारे में समस्त सूचनाएँ संकलित करते हैं जिसे हम स्वतः कभी नहीं जान सकते। ''[*3]

'' पत्रकारिता वह धर्म है, जिसका संबंध पत्रकार के उस कर्म से है– जिससे वह तात्कालिक घटनाओं और समस्याओं का सबसे अधिक सही और निष्पक्ष विवरण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करें और जनमत जाग्रत करने का श्रम भी करें ''

– डॉ. भँवर सुराणा[*4]

'' पत्रकारिता ही विभिन्न समूहों और व्यक्तियों के बीच सेतु का कार्य करती है। वह हमारी तथाकथित विस्तृत हो गई संवेदना को खुशक प्रदान करती है और जीवित रहती है। ''

– डॉ. अर्जुन तिवारी[*5]

ब्रिटिश संसद के अनुसार –––

जिस में कागज़ समाचार, घटनाएँ जानकारी आदि हों और जो बिक्री–हेतु नियत स्थान पर छापा जाता है , उसे समाचारपत्र कहते हैं। समाचारपत्रों के अन्तर्गत केवल दैनिक समाचारपत्र नहीं, बल्कि साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक और सभी तरह के पत्र सम्मिलित किये जाते हैं , लेकिन समाचारपत्र का नाम आते ही दैनिक समाचारपत्र का रूप ही समक्ष आता है।

न्यू वेब्सर्टस डिक्शनरी के अनुसार –

Journalism: The occupation of conducting a news medium including publishing, editing, writing or broadcasting.

समाचारों के प्रकाशन, लेखन, सम्पादन का व्यवसाय ही पत्रकारिता है।[*6]

" Journalism is communication. It is the events of the day distilled into a few words, Sounds or pictures,processed by the mechanics of communication to satisfy the human curiosity of a world that is always eager to know what is new"

- David Von Right[*7]

1.1पत्रकारिता का स्वरूप :

पत्रकारिता हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके बिना जीवन में सम्पूर्णता नहीं हो सकती है। इसके बिना किसी समुदाय, आराधना या मानव गरिमा की स्थापना की कल्पना भी नहीं की जा सकती। पत्रकारिता आधुनिक युग की लेखन–विधाओं में सर्वाधिक जीवन्त विधा है।

पत्रकारिता जन जागृति उत्पन्न करते हैं, शिक्षा का व्यापक प्रचार–प्रसार करते हैं, पर्यावरण के संरक्षक हैं, पर्यटन को बढ़ावा देते हैं, सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, व्यापारिक उपलब्धियों का प्रचार–प्रसार करते हैं, मूल्यांकन–पुनर्मूल्यांकन करते हैं। ये राष्ट्रीयता, भारतीयता और मानवता की प्रतिष्ठा करते हैं।

पत्रकार राजकिशोर लिखते हैं कि – '' पत्रकारिता खबरों की सौदागरी नहीं है, न उसका काम सत्ता के साथ शयन है। उसका काम **जीवन की सच्चाईयों को सामने लाना है।**''[*8]

पत्रकारिता अपने विचारों को जनता तक पहुँचाने का उपक्रम है। **पत्रकारिता एक अर्थ में अतीत की व्याख्यता, वर्तमान की कहानी और भविष्य की निर्माता है।** पत्रकारिता मनुष्य और समाज, मज़दूर और मालिक, शासक और शासित के बीच एक ऐसी कड़ी बन गई है जो दोनों में सामन्जस्य पैदा कर देती है। पत्रकारिता साहित्य की विधा नहीं बल्कि साहित्य पत्रकारिता के विवेचन का साधन है। आज पत्रकारिता में कहानी, साहित्य, उपन्यास, नाटक, एकांकी, रिपोर्ताज, संस्मरण,रेखाचित्र, जीवनी, फीचर आदि सभी शामिल हैं।

पत्रकारिता के कुछ **शाश्वत धर्म** ही उसके स्वरूप को उद्घाटित कर सकते हैं, जिन्हें इस क्रम में रखा जा सकता है –

पाश्चात्य विद्वान सी.जी. मुलर ने सामाजिक ज्ञान के व्यवसाय को पत्रकारिता माना है। उनका मत है कि इसमें तथ्यपरता, मूल्यांकन एवं उपयुक्त प्रस्तुतीकरण आवश्यक है।

मानव–समाज की सांस्कृतिक, साहित्यिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, व्यापारिक, शैक्षिक, नैतिक, मूल्यगत उपलब्धियों के विवरण–विश्लेषण, मूल्यांकन और प्रस्तुतीकरण का माध्यम है पत्रकारिता। सूचना प्रदान करना, सत्य को उद्घाटित करना, जनता को शिक्षित करना मनोरंजन करना मूल्यों की प्रतिष्ठा करना ही इसका परम लक्ष्य है। यह जन–मानस को जागृत और शिक्षित करती है।

पत्रकारिता की विशेषताएँ :

पत्रकारिता की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- पत्रकारिता समाज की गतिविधियों का आइना है और उसकी दृष्टि सूक्ष्म होती है। यह शासन व जनता के बीच सेतु का कार्य करती है।
- यह सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों की संरक्षिका है।
- पत्रकारिता की एक प्रमुख विशेषता उसका नीर–क्षीर विवेकी प्रकृति है।
- यह एक कुशल चिकित्सक के समान समसामयिक परिस्थितियों एवं घटनाचक्र की नाड़ी को थामकर उसके चाल–ढाल गति का अंदाजा लगाकर स्वास्थ्य को सुधारने का काम करती है।
- यह मानवीय गुणों के विकास में सहायक है।
- यह जागरूकता पैदा करने में व प्रेरणा प्रदान करने में सहायक है और इसका क्षेत्र भी वैविध्यपूर्ण है। यह वर्तमान युग की मार्ग निर्देशिका है।

पत्रकारिता : तीव्र वैचारिकता का प्रतिफलनः

तीव्र वैचारिकता का प्रतिफलन का ही नाम है –'पत्रकारिता' जो जीवन्त समाज का अभिन्न अंग है। जिस समाज की चेतना जितनी प्रखर होती है वहाँ पत्रकारिता का विकास भी उतनी ही शीघ्रता से होता है **जिज्ञासु मस्तिष्क को नए एवं विविध तथ्यों की जानकारी और विश्व की विभिन्न परिस्थियों का ज्ञान पत्रकारिता ही करा सकती है।** पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य ही है सम्पूर्ण समाज के समग्र स्वरूप को सबके लिए सामने लाना। समाज के सभी लोगों की जानकारी के लिए गोपनीय से गोपनीय विषयों का रहस्योद्घाटन पत्रकारिता की सफलता का मूल तत्व है। इसी प्रकार सक्रियता तथा नियमिता से पत्रकारिता की जीवनी–शक्ति प्रमाणित होती है। पत्रकारिता समाज में जागरूकता का वातावरण उपस्थित करने में सहायक होती है।

1.2 पत्रकारिता का उद्देश्य एवं महत्व :

मनुष्य एक समाजिक प्राणी है क्योंकि उसे सभी से मिल–जुल कर रहना पसंद है। इस सामाजिकता के कारण कुछ न कुछ नया करने या जानने की आकांक्षा को जन्म देती है। यह पत्रकारिता के द्वारा ही संभव है। अतः पत्रकारिता स्वतः ही मानव और उसके आसपास की दुनिया से लेकर अनदेखे रोमांचक तथा नए–नए तथ्यों, जानकारियों को समेट कर चलती है।

डॉ. अर्जुन तिवारी के अनुसार–समाज के संदर्भ में सजग उत्कृष्ट नागारिकों में ज़िम्मेदारी का बोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते हैं। गीता में जगह–जगह 'शुभ–दृष्टि' का प्रयोग है। यह शुभ–दृष्टि ही पत्रकारिता है, जिसमें गुणों को परखना तथा मंगलकारी तत्वों को प्रकाश में लाना शामिल है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तो उसमें 'सम दृष्टि' को महत्व देते थे। समान हित में सम्यक प्रकाशन को पत्रकारिता कहा जाता है।[*9]

तिलक के अनुसार – पत्रकारिता का उद्देश्य जनता को शिक्षित करना है। पत्रकारिता को स्वार्थ सिद्धि का साधन न मानकर उसे आम जनता के लिए राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के साधन के रूप में माना है। *10

पत्रकारिता कामुख्य उद्देश्य :

पत्रकारिता अगर एक ओर सूचनाओं और समाचारों का संकलन, सम्पादन, प्रकाशन और प्रेषण है तो दूसरी ओर वह वर्तमान समय की धड़कनों को महसूस करने का साधन भी है। पत्रकारिता लोगों की सेवा करती है, अन्याय और दमन का प्रतिरोध करती है एवं रचनात्मक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित करती है। व्यापक अर्थों में वह समाज में उच्च मूल्यों और आदर्शों की प्रतिष्ठा में सहयोग देती है। पत्रकारिता के चार प्रमुख उद्देश्य अग्रलिखित हैं–

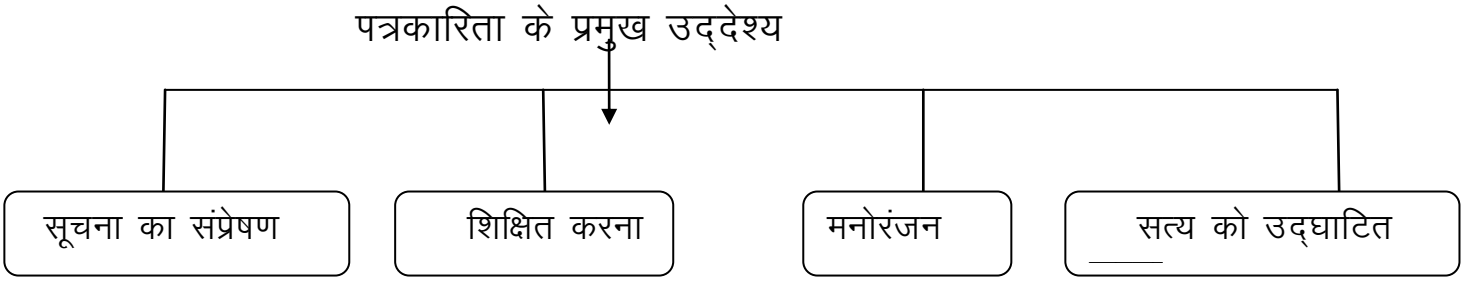

1.सूचना का संप्रेषण –

पत्रकारिता जन–जन को विश्व रंगमंच पर घटित होने वाली घटना से परिचित कराती है। इसके माध्यम से जनता को सरकारी नीतियों एवं गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त होती रहती है। यह जनहितों का सरंक्षण करती है।

2. शिक्षित करना –

सूचना के अतिरिक्त पत्रकारिता का प्रमुख कार्य लोगों को शिक्षित करना भी है। पत्रकार जनता के आँख एवं कान होते हैं। पत्रकार जो देखता तथा सुनता है उसे मुद्रित एवं इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से जनता तक पहुँचाता है। पत्रकारिता सूचना के साथ–साथ जनमत तय करने की दिशा में महत्वपूर्ण आधार तैयार करती है। सम्पादकीय स्तम्भों, अग्रलेखों, पाठकों के पत्र, परिचर्चाओं इत्यादि विभिन्न

तरीकों के माध्यम से जनता को सामयिक एवं महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी देकर उनकी मानसिक जरूरत की पूर्ति की जाती है। देश की वैचारिक चेतना को पत्रकारिता ही उद्वलित करती हैं। इस तरह पत्रकारिता जनशिक्षण का प्रमुख माध्यम है।

3. मनोरंजन–

समाचार–पत्र–पत्रिकाएँ भी इस दृष्टि से काफी स्थान पाठकों के मनोरंजन के लिए सम्बन्धित सामग्री हेतु सुरक्षित कर रही हैं। जैसे– सिनेमा से संबंधित विषय, चुटकुले, राशि फल, रोजगार संबंधी विषय। मनोरंजन सामग्री पाठकों को स्वाभाविक रूप से आकर्षित भी करती है। मनोरंजन में अनेक बार शिक्षा का मार्मिक सन्देश भी छिपा रहता है। उदाहणार्थ राजनैतिक कार्टून एवं ऐसे ही हास्य–व्यंग्य के स्तम्भ। उनके मूल में सामाजिक–राजनीतिक जीवन में स्वस्थ भावों का संचार करना ही होता है। मनोरंजन की दृष्टि से पत्र–पत्रिकाएँ जहाँ मनोरंजक समाचारों के प्रकाशन में रुचि लेते हैं, वहीं फीचर लेखों द्वारा यह कार्य विशेष रूप से किया जाता है। मनोरंजन मानवीय रुचि का महत्वपूर्ण पहलू है।

4. सत्य को उद्घाटित करना –

जैसे–जैसे हमने विकास किया है वैसे–वैसे हमारा समाज प्रदूषित भी हुआ है। आज जीवन का ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं बचा है जहाँ मानवीय कमजोरियाँ जैसे – काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि का वर्चस्व हो। व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए आज कुछ लोग बड़े–बड़े साधु–सन्त का वेश धारण कर समाज को भ्रमित कर रहे हैं। भोली–भोली जनता उनके बहकावे में आकर अपना अहित कर रहे हैं। इस विषय परिस्थितियों में पत्रकारिता का उद्देश्य यह भी है, कि वह जनसामान्य के सामने सत्य का खुलासा करे।

पत्रकारिता का प्रमुख उद्देश्य संपूर्ण समाज में नव–संचार, सजीवता, जागरण, नवस्फूर्ति, सक्रियता और गतिमयता के संदेश का प्रचार और प्रसार करना है।

पत्रकारिता के उद्देश्यों के बारे में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए थेः–

'' पत्रकारिता का पहला उद्देश्य जनता की इच्छाओं और विचारों को समझना तथा उन्हें व्यक्त करना है। दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना तथा तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक दोषों को निर्भीकतापूर्वक प्रकट करना है।''[*11]

ज्ञान और विचारों को समीक्षात्मक टिप्पणियों के साथ शब्द, ध्वनि तथा चित्रों के माध्यम से जन–जन तक पहुँचाना ही पत्रकारिता है।

"The objective of journalism is service." --M.K.Gandhi[*12]

मानवीय गुणों के विकास में पत्रकारिता का अनुपम योगदान है । यह वर्तमान संग की मार्ग–निर्देशिका और मानवीय अस्मिता का सशक्त सम्प्रेषण माध्यम है। आज यह शासन और जनता के बीच सेतु का कार्य भी सम्पन्न करता है। इसकी उपयोगिता और महत्ता सार्वदेशिक एवं शाश्वत है; अतः इसे लोकतंत्र कहा जाता है।

स्थूल रूप में पत्रकारिता का उद्देश्य खबरों, घटनाओं को एकत्रित करना, इनका विवेचन करना, उनका विवरण इकट्ठा करना और उन्हें समाचार–पत्र के माध्यम से लोगों तक प्रसारित करना है। यह समाज की कमियों, खामियों और गलतियों को उजागर करता है और लोगों तक पहुँचाता है। इससे गलत काम करने वालों में पत्रकारिता का भय फैलता है कि वे इस तरह के काम न करें। **पत्रकारिता का उद्देश्य समाज कल्याण ही है।** जो समाज की विकृतियों को

उजागार करके उन्हें दूर करने का प्रयास करती है और सुधारों को सामने लाकर उन्हें विकसित करने का प्रयास करती है।

एक लेखक का कथन है कि –

'' पत्रकारिता का मूल उद्देश्य अन्यायों और बेईमानी का उद्घाटन कर, दोषों, कमियों , खामियों को उजागर करना, सलाह मशविरा देना और असहाय की सहायता करना और लोगों का मार्गदर्शन करना । ''[*13]

पत्रकारिता के सोलह सिद्धान्त :

जैसे चिट्ठी से हम किसी भी मित्र या परिचित को अपने विचार, समाचार और सूचना प्रेषित करते हैं उसी तरह समाचार पत्र हम तक दुनिया की घटनाओं, विचार और विवेचन प्रेषित करते हैं। समाज की समस्त घटनाओं को प्रतिबिम्बित कर यह स्वयं समाज से प्रभावित तो करता ही है। समाचार पत्र को अपने पाठकों के गौरव की रक्षा करनी चाहिए। पत्रकार का धर्म है कि अपने समाचारों, लेखों, अग्रलेखों और विविध विषय के लेखों के द्वारा जनता, शासन और समाज को अपने–अपने कर्तव्य के प्रति सजग रख कर उनके गौरव और गरिमा की रक्षा करे। इसी तरह पत्रकार भी समाज का सजग प्रहरी होता है।

अखबार का धर्म है कि वह अंधकार की स्थिति का भेदन करके आदमी का आदमी के साथ, समाज का समाज के साथ और देश का देश के साथ नया सम्बन्ध जोड़ने का पुनीत कार्य बराबर करते रहे।

पत्रकारिता का सुव्यवस्थित स्वरूप बनाये रखने तथा पत्रकारिता का अनुशासन बनाने के लिए सम्पादकों के लिए नियम बनाये गये थे। सम्पादन करनेवालों को उचित है कि इन सोलह बातों पर सदा ध्यान दिया करें। यह 'सुलभ समाचार' से उद्धृत है।

❖ ठीक संवाद जान करके उस पर अपना मत प्रकट करना और तदनन्तर उसका वर्णन करना।

❖ बातें बहुत बढ़ा कर नहीं बोलना।

❖ खास किसी एक मनुष्य का चरित्र भेजें खोद–विनोद न करना।

❖ दुर्बल शत्रु को दोष की अवस्था में पावे मनमोहन बातें सुना कर उसे दुःखित करने अथवा उसे चिढ़ा कर उससे आनन्दित होने की चेष्टा छोड़ देनी चाहिए।

❖ अपने मन का वास्तविक दुष्ट अभिप्राय गुप्त रखने के निमित्त छिपे–छिपे किसी के विरुद्ध कपट–भाव से स्पष्ट बातें न बोलना।

❖ जिस विषय का स्थिर, परिष्कृत सिद्धान्त न पाना उसे पत्र में न प्रकट करना।

❖ अपने विरुद्ध जो जी चोखे और परद्र पक्ष कहीं से पाना अथवा अन्य किसी संवादपत्र में लिखे देखना तो उन्हें अपने पत्र में उद्धृत करके प्रकट करना।

❖ मन में किसी से अकस न रखना।

❖ लिखना वही ठीक है जिसे शत्रु भी बाँच के मुँह न बिचका कर प्रत्युत उसके द्वारा अपने को उपकृत बोध करें।

❖ तेज कलम चलाना अथवा सुन्दर बातें बनाना अपना प्रधान कर्म न समझना।

❖ लोगों के बीच प्रशंसा पाने निमित्त बहुत छटपटाना अच्छा नहीं।

❖ मनुष्य को बहुत–सा न दबा के काम पड़ने पर उसके कार्य–भर का विवरण कर देना काफी है।

❖ सत्य की जाँच में अधिक प्यार करना, निर्भय होकर बोलना पर शान्ति और उदारता के साथ।

- ❖ देश को सुधारना अपना प्रधान उद्देश्य समझना, उस विषय का जो कुछ सर्वसाधारण मत पाना ऊपर प्रकाश करना और जो कुछ मान और विवेचना उसमें बाकी देखना, नीचे लिख देना।
- ❖ बनाने की इच्छा छोड़ कभी किसी के बिगाड़ने की इच्छा मन में न उठने देना।
- ❖ जब कुछ लिख कर प्रकट करना तो समालोचना करनेवालों का मुँह बन्द रखने के निमित्त नहीं किन्तु अपनी भूल सुधार देने के निमित्त अनुरोध करना।

पत्रकारिता का महत्व :

पत्रकारिता के लिए "मौसम पक्षी", "लोक सभा का स्थायी अधिवेशन", "पावर बिहाइंडदि थ्रोन", "आल पावरफुल" जैसे विशेषण भी दिए जाते हैं। वास्तव में पत्रकारिता जनता के समक्ष उपस्थित समस्याओं के निरसन की प्रेरणा देती है और इस क्रम में अनेक विकल्प प्रस्तुत करके उनके चयन हेतु जनता को उचित वातावरण प्रदान करती है। आज पत्रकारिता का महत्व इसलिए बढ़ गया है क्योंकि वह जनता तक सुलभ है और अधिकांश लोगों के दिन का प्रारम्भ समाचार पत्र से होता है। प्रातःकाल पूरे अन्तराष्ट्रीय घटनाचक्र से जुड़कर ही मनुष्य दैनन्दिनी की ज़िन्दगी में प्रवेश करता है और इसे यों कहा जा सकता है पत्रकारिता आज हमारी आदत में सुधार कर रही है।

पारिवारिक मूल्यों का मूल्यांकन–पुनर्मूल्यांकन का माध्यम भी पत्रकारिता है। विषम सामाजिक स्थितियों का सूक्ष्म निरूपण और प्रस्तुतीकरण पत्र–पत्रिकाओं में ही समय–समय पर होता है। बदलते परिवेश में मानव सम्बन्धों की जटिलताओं के कारणों, प्रतिक्रियाओं और परिणामों को विश्लेषित करने की दृष्टि से भी पत्रकारिता की महत्ता है। घटना–परिघटनाओं का लेखा–जोखा प्रस्तुत कर पत्रकारिता समाज का मार्गदर्शन करती है, चेतित तथा जाग्रत करती है, प्रगति

एवं समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करती है। पत्रकारिता ही जीवन को पूर्ण बनाने के कार्य को संपादित करती है। **यह लोक–संस्कृति, मूल्य–शिक्षा का सफल माध्यम भी है।**

महादेवी वर्मा ने पत्रकारिता की उपयोगिता को समझाते हुए अपनी मान्यता को इस प्रकार व्यक्त किया है – पत्रकारिता एक रचनाशील विधा है। इसके बगैर समाज को बदलना असंभव है। अतः पत्रकारों को अपने दायित्व और कर्तव्यों का निर्वाह निष्ठापूर्वक करना चाहिए क्योंकि उन्हीं के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जायेगा।

किसी भी सूचना या घटना का अत्यन्त सूक्ष्मता से अध्ययन कर उसके वास्तविक स्वरूप को हमारे सम्मुख प्रस्तुत करने का कार्य पत्रकारिता का है और यह एक सजग प्रहरी के रूप में समाज को दिशा देती हैं पत्रकारिता का उद्देश्य न केवल सामाजिक विसंगतियों को दर्शाना है अपितु उनके समाधान हेतु समाज के कर्णधारों को प्रेरित करना भी है। पत्रकारिता जहाँ मानवीय संवेदनाओं एवं भावों के सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम है वहीं यह एक कुशल चिकित्सक की भाँति समाज में व्याप्त अनेक व्याधियों को दूर करने का प्रयास करता है। समाज में व्याप्त आक्रोश और असंतोष की अभिव्यक्ति कर पत्रकारिता सामाजिक मूल्यों का संवर्धन एवं संरक्षण करती है।

प्रमुख पत्रकार एवं राजनेता पंडित कमलापति त्रिपाठी ने अपनी पुस्तक " पत्र और पत्रकार " में लिखा है, "ज्ञान और विज्ञान, दर्शन और साहित्य, कला और कारीगरी, राजनीति और अर्थनीति, समाजशास्त्र और इतिहास, संघर्ष और क्रान्ति, उत्थान और पतन, निर्माण और विनाश, प्रगति और दुर्गति के छोटे बड़े प्रवाहों को प्रतिबिम्बित करने में पत्रकारिता के समान दूसरा कौन सफल हो सकता है।"[*14]

राष्ट्र में घटनेवाली सभी घटनाओं का विवरण देकर **पत्रकारिता चिंतन के लिए प्रेरित करती है, सृजनात्मक शक्ति प्रदान करती है।** यह मानव–जीवन की मार्ग–दर्शिका, जीवन–निर्मात्री एवं सामाजिक मूल्यों की विधायिका भी है। पत्रकारिता में नीर–क्षीर विवेक का महत्व है; इसलिए **तटस्थता, पारदर्शिता और निष्पक्षता पत्रकारिता के प्राण तत्व हैं।** विवेक संबलित सत्य–असत्य, मूल्य–अमूल्य, नैतिकता–अनैतिकता का निर्धारण भी पत्रकारिता की महत्ता का मूल है।

समाज में पत्रकारिता का महत्वः

पत्र–पत्रिकाएँ समाज का दर्पण होती हैं। समाज में जो हुआ और जो हो रहा है या जो कुछ होगा–इस त्रिकाल से संबंधित समस्त हिसाब पत्र–पत्रिकाओं में चित्रित होता है। इस समस्त कार्य विधान के पीछे पत्रकार का विशेष हाथ होता है।मानव नई–नई बातों की जानकारी चाहता है यही उसके अनुरूप है। व्यक्ति अपने अनुभवों और विचारों के आधार पर अपनी जिज्ञासा वृत्ति की संतुष्टि करने के लिए अनेक साधनों का निर्माण करता है तथा उनको सहयोग में लाता है। पत्रकारिता में घटित घटनाओं के लेखा–जोखा के साथ घटना के कारणों, उसकी प्रतिक्रियाओं और उनकी शांति के लिए हो रहे उपायों का वर्णन किया जाता है। इन जानकारियों के माध्यम से पत्रकारिता समाज को सचेत करती है। पत्रिकाएँ आज के युग की लोक गुरु हैं।

पत्रकारिता का दायित्व :

राष्ट्र के कोने–कोने में जागरण, नवस्फूर्ति और नव–निर्माण के मंत्र को फूँकना ही पत्रकारिता का पावन लक्ष्य है। यह एक रचनाशील विधा है जिससे समाज का अमूल–चूल परिवर्तन संभव है । समाज के विस्तृत क्षेत्र के संदर्भ में पत्रकारिता के निम्नलिखित दायित्व हैं–

1. जन–जन को स्वस्थ मनोरंजन की सामग्री देना।

2. सामाजिक जनमत की अभिव्यक्ति देना और जनता को उचित दिशा निर्देशित करना।
3. समाजिक कुरीतियों (बाल–विवाह, विधवा–उपेक्षा, दहेज, बहू–हत्या, वेश्यावृत्ति, अंधविश्वास) को मिटाने की दिशा में प्रभावी कदम उठाना।
4. धार्मिक और सांस्कृतिक पक्षों का दो टूक विवेचन करना।
5. कृषि–जगत् और उद्योग–जगत् की उपलब्धियों को साधारण जनता तक पहुँचाना।
6. सरकारी नीतियों का विश्लेषण एवं प्रसारण।
7.महिला–जगत्, बाल–जगत्, क्रीडा–जगत्, चलचित्र–जगत् के विविध कार्यक्रमों का प्रसार।
8. शिक्षा, शिक्षक, विद्यार्थी वर्ग को समीचीन मार्ग बतलाना।
9.सर्वधर्म समभाव् एवं सौहार्द–भाव को पुष्ट करना।
10. संकटकालीन परिस्थितियों में राष्ट्र का मनोबल बढ़ाना।

इस प्रकार अन्याय का प्रतिरोध कर मित्र–विहीन लोगों को मित्रवत् मार्ग दिखाना ही पत्रकारिता है। समाज में मानव–मूल्यों की स्थापना के साथ जन–जीवन को विकासोन्मुख बनाना पत्रकारिता का दायित्व है।

पत्रकारिता समाज का दर्पण हैं जिसमें इसका अतीत एवं वर्तमान तो बिम्बित होते ही हैं, भविष्य–निर्माण के दिशा–निर्देश भी निहित होते हैं। यह विश्व के कोने–कोने में नव संचार, सजीवता, जागरण, सक्रियता, नवस्फूर्ति और गतिमयता, प्रगति समृद्धि की प्रेरिका है। ज्ञान–विज्ञान, सूचना–क्रांति के द्वारा ही आज विश्व–ग्राम का सपना साकार होने को है।

वर्तमान समय में इसी कारण पत्रकारिता के सिद्धान्तों में आदर्शवादिता को खोज पाना कठिन ही है, फिर भी अतिरिक्त समाचार–पत्रों का आरम्भ तथा पत्रकारिता कतिपय आदर्श लेकर ही प्रकट हुई थी। मनुष्य के मन में आदर्शों का

जागरण और उनका वमन कैसे तथा कब या किन परिस्थितियों में होता है, यहाँ इस सम्बन्ध में विशद विवेचन करना समीचीन न होते हुए भी यह कहा जा सकता है कि यह विशेष परिस्थितियों में ही जागृत होती है। उदाहरण के तौर पर निराश्रित, निर्धन, दुखी याचक को देखकर मनुष्य के मन में उदारता उदय होकर उसे ऐसे शिक्षार्थी को कुछ देने की प्रेरणा देती हैं न्यायप्रिय स्वामी के प्रति जो अपने सेवकों के दुःख–सुख मानता है, उसके प्रति आस्था पैदा होती है। परिवार में वृद्ध माता–पिता को दुखी न देखने की प्रेरणा सन्तान के हृदय में उत्पन्न होती है। इसी तरह के पारस्परिक व्यवहारों के लिए मनुष्य समाज में एक नैतिक आचार संहिता का स्वाभाविक रूप से जन्म हुआ होगा। कालान्तर में वह स्वाभाविक रूप से ग्रहण की गई आचार संहिता ही नैतिकता के सिद्धान्त बनकर प्रकट हुई। इसी तरह हुजब प्रेस का आविष्कार हुआ तथा सामान्य जनता की विविध समाचारों को जानने के स्वभाव का सहज अनुमान कुछ लोगों को हुआ होगा, तो जनता की इस अभिरूचि को सनतुष्ट करने के लिए ही समाचार–पत्र का प्रकाशन शुरू हुआ होगा। इससे पहले समाचार संग्रह करने तथा उन्हें जानने का प्रयोजन कभी किसी सुदूर अतीत में शासकों का ही था तथा वह अपने गुप्तचरों को इस कार्य के लिए अपने राज्य में नियुक्त करते थे। परन्तु उसका उद्देश्य सामान्य जनता के विचारों और क्रियाकलापों को जानने तक सीमित था। वह सम्भवतः पत्रकारिता का प्रथम अधिकारिक रूप था। इससे पहले सामान्य जनता में खबरों का आदान–प्रदान व्यक्तिगत ही था तथा कई लोग एक से भी अधिक रहे होंगे, जिन्हें तरह–तरह की खबरों को स्वयंमेव जनता को सुनाने में आता रहा हो तथा वह लोगों में से खबर फैलाते रहे हों। शासकों की ओर से प्रसारित सार्वजनिक सूचनाएँ प्रसारित करने के भी साधन थे। वर्तमान युग में पत्रकारिता का जब उदय हुआ तो उसके सामान्यतः सिद्धान्त क्या रहे होंगे, यह सिर्फ अनुमान की ही बात है, अन्यथा यह समझा जा सकता है कि

औद्योगिक क्रान्ति के काल में समाचार पत्रों का उद्देश्य क्रान्ति के कारण शोषण का शिकार हो रही जनता की आवाज को बुलन्द करना ही होगा।

अतः पत्रकारिता के सिद्धान्तों ने नैतिक आधार पर 'जन–कल्याण' और 'जन–जागृति' नामक दो सिद्धान्तों को आधार मानकर पत्रकारिता को पवित्रता प्रदान करने के आदर्शों का अनुसरण किया होगा। जनता के दुखों को प्रकाश में लाकर, जिनके कारण उसे दुख प्राप्त हो रहा था, उनके मन में उदारता आदि नैतिक भावों की सृष्टि करना और शासन का ध्यान आकृष्ट करना लक्ष्य रहा होगा, क्योंकि इसी कार्य के माध्यम से पत्रकारिता के इन दोनों सिद्धान्तों का पालन हो सकता था– जनता को जाग्रत करना और तात्कालिक वस्तु–स्थिति का ज्ञान कराना। अतः पत्रकारिता ने एक आदर्श कार्य का उत्तरदायित्व लिया।

पत्रकारिता के सिद्धान्त उसके महत्त्व में दिखाई पड़ते हैं। इस सम्बन्ध में डॉ. वेद प्रताप वैदिक का विचार है–'' विधायिका, कार्यपालिका और खबर पालिका भी लोकतन्त्र का महत्वपूर्ण स्तम्भ है। पत्रकार का किसी विशेषाधिकार की आकांक्षा न रखते हुए न्यायाधीश की सी निष्पक्षता तथा योद्धा की सी सच्चाई उजागर करनी चाहिए। वे अपनी स्वयं की आचार संहिता के साथ पत्रकारिता में प्रेवेश करें।''*15

अर्थात् पत्रकारिता के मूल सिद्धान्त निम्न होने चाहिए –

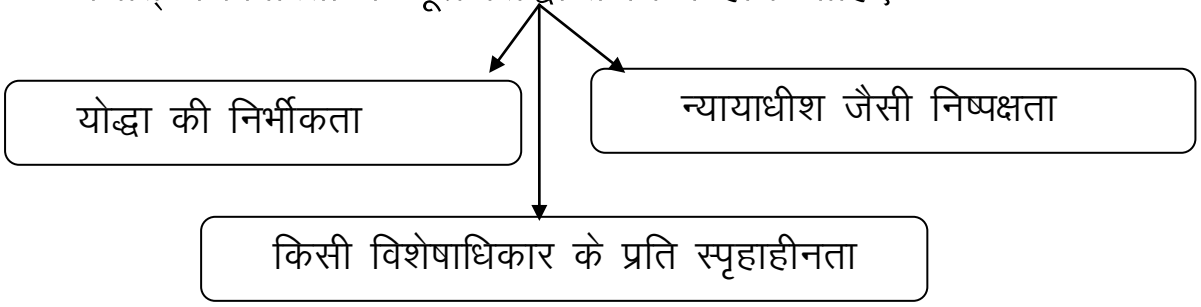

पत्रकारिता–पाषण युग से परमाणु युग तक :

पत्रकारिता का उद्‌भव मानव सभ्यता के साथ ही हुआ है। पूर्व बौद्धकाल में भिक्षु लोग गाँव–गाँव घूमकर नैतिक तथा धार्मिक कथाओं का प्रदर्शन किया करते थे। प्राचीन भारत में राजा प्रजा के बीच संचार की परम्परा थी। राजा अपने आदेशों को संदेश वाहकों के माध्यम से जनता तक पहुँचाता था तथा गुप्तचारों के माध्यम से जनता के बारे में जानकारी प्राप्त करता था। पारम्परक संचार माध्यम ग्राम्य संस्कृति की उपज हैं जिसकी मौलिकता तथा विश्वसनीयता अटूट है। लोक कलाओं का उद्‌भव और विकास अनपढ़, अकृत्रिम ग्रामीण जनता के बीच हुआ। लोक–कथा, लोक–साहित्य, लोक–नृत्य आदि संचार के लिए बहु उपयोगी साधन है।जो पाषण युग में पत्रकारिता की प्रगति का पौधा रोपा था वह अभी स्वाभाविक रूप से यह कल्प वृक्ष के रूप में विकसित हुआ है। पत्रकारिता प्रिंट माध्यम है। इसके साथ ही इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के द्वारा भी संचार संभव है। इसमें समाचार–पत्र ही सबसे सस्ता और प्रभावशाली साधन है। पत्रकारिता, तो एक ओर समाज के प्रत्येक स्पंदन की माप है;वहीं विकृतियों की प्रस्तोता आदर्श एवं सुधार लिए सहज उपचार।

हिन्दी पत्रकारिता की विकास यात्रा :

हिन्दी पत्रकारिता की विकास यात्रा

*आज का युग
*आधुनिक युग
*गाँधी युग
*द्विवेदी युग
*मालवीय युग
*भारतेन्दु युग

सन् 1826 ईसवीं में 'उदन्त मार्त्तण्ड' नामक हिन्दी साप्ताहिक पत्र कलकत्ते से प्रकाशित हुआ जिसके संस्थापक और सम्पादक श्री युगलकिशोर शुक्ल थे। आर्थिक तंगी के कारण यह साप्ताहिक पत्र अधिक समय तक नहीं चल सका। एक वर्ष और सात महीने तक 'उदन्त मार्तण्ड' चला। इसके अन्तिम अंक में सम्पादक ने लिखा था,

''आज दिवस लौं अग चुक्यों मार्तण्ड उदन्त/अस्ताचल को जाता है , दिनकर–दिन–अन्त।'' *16

हिन्दी का प्रथम दैनिक समाचार पत्र समाचार सुधावर्षण सन् 1854 में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। यह हिन्दी का पहला दैनिक था। यह बंगल में निकलता था। इसके बाद लाला सीताराम का **दैनिक भारतोदय** 1884 में निकला। इसके बाद **दैनिकहिन्दोस्तान** भी प्रकाशित किया। बंगदूत एक त्रैभाषिक पत्र था जो बंगला, फारसी और हिन्दी तीनों भाषाओं में प्रकाशित हुआ।

भारतेन्दु युग :

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को वर्तमान हिन्दी का जनक कह सकते हैं। भारतेन्दु मण्डल राष्ट्रीय जागरण की महत्वपूर्ण कड़ी है। हिन्दी भाषी प्रदेशों में नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने राष्ट्रभाषा उत्थान की प्रेरणा और धन सम्पदा से अनेक हिन्दी पत्रों का प्रकाशन, मार्गदर्शन और संपादन किया। इसका परिणाम यह हुआ कि उनके अल्प जीवन काल में ही लेखकों और संपादकों का एक मण्डल तैयार हो गया, जिसे ' भारतेन्दु मण्डल पत्रकार – साहित्यकार ' के नाम से जाना जाता है। इस मण्डल के संपादक साहित्यकारों का जीवन त्याग और संघर्ष से परिपूर्ण था। आगे चलकर भारत में जो जागृति उत्पन्न हुई, इसकी शुरूआत इस युग के संपादक और साहित्यकारों ने ही की थी, जो अपने सिद्धांत और उद्देश्य के प्रति पूर्णनिष्ठा से कटिबद्ध थे।

कविवचनसुधा :

कविवचनसुधा का मूल लक्ष्य भारतीयों में स्वत्व की भाव का संचार करना था। इसके माध्यम से ही हिन्दी को उत्कृष्ट कोटि का साहित्य प्रदान किया और इसके साथ ही भारतीयों में समाज सुधार, स्वभाषा उत्थान, स्वदेशी के प्रति जागरूकता तथा राष्ट्रभिमान की भावना भरने का बीड़ा भी उठाया। सन् 1868 में इसका प्रकाशन शुरू किया जो मूल रूप में कविता की पत्रिका थी।

बालबोधिनी :

स्त्रियों को संस्कारित करने एवं उनकी उन्नति एवं दशा सुधारने के लिए सन् 1874 में 'स्त्री जनों की प्यारी हिन्दी भाषा में सुधारी' मासिक 'बालबोधिनी' का प्रकाशन किया। भारतेन्दु ने लिखा था कि – स्त्रियाँ पुरूषों की आद्य शक्ति हैं और उनमें अभिन्नता है। वे ही राष्ट्रहित में शक्ति संपन्न पुरूषों को खड़ा कर सकती है। राधा कृष्ण की शक्ति थी और पार्वती शिव की। कृष्ण और शिव को उनकी शक्तियों से विभक्त नहीं किया जा सकता है। भारतेन्दु स्त्रियों को शक्ति संपन्न बनाने के साथ–साथ उनमें सीता, अनुसुइया, सती अंरूधती के समान शील, सज्जा, विद्या आदि के सुसंस्कार पल्लवित करना चाहते थे।

जो हरि सोई राधिका, जो शिव सोई शक्ति।
जो नारि सोई पुरूष, या में कछु न विभक्ति।।
सीता, अनुसुइया, सती, अरूंधती अनुहारि।
शील लाज विधादि गुण लहौं सकल जन नरि।। *17

इस युग के पत्रकारों में अम्बिकादत्त व्यास, रुद्रदत्त शर्मा, दुर्गाप्रसाद मित्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र का योगदान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

मालवीय युगः

महामना मदनमोहन मालवीय ने स्वयं ' अभ्युदय' नामक पत्रिका निकाली। इस युग में पत्रकारिता का लक्ष्य ही **राजनैतिक चेतना** को जागृत करना ही था। अभ्युदय से उत्तरप्रदेश में राजनीतिक चेतना जगाने का प्रयास पं. मालवीय ने किया। राजनीतिक विशेषता के साथ–साथ दूसरे विषयों पर समाचार पत्र लिखने लगे थे। सामाजिक समस्याओं, साहित्य तथा कुछ अन्य विषय भी अब समाचारपत्रों के दिन–प्रतिदिन के हिस्से बन रहे थे।

द्विवेदी युगः

इस युग में पत्रकारिता का उद्‌देश्य ही साहित्य सेवा, राजनैतिक जागरण और जनता की अभिव्यक्ति। द्विवेदी ने 1903 में 'सरस्वती' का प्रकाशन किया। इस पत्रिका के माध्यम से द्विवेदीजी की शैली की झलक मिलती है। 20 वर्षों तक द्विवेदी ने इसका संपादन किया तथा इस दौरान यह पत्रिका हिन्दी पत्रकारिता ही नहीं; आधुनिक भाषा साहित्य की भी अग्रदूत बन गई। आजादी के पूर्व हिन्दी पत्रकारिता सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलनों से जुड़कर ऊर्जा प्राप्त करती थी।

गाँधी युगः

गाँधी युग में राष्ट्रीय भावना विकास में तत्पर थी। पत्रकारिता की मुख्य धारा राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित होकर महात्मा गाँधी के नेतृत्व से बढ़ रहे राष्ट्रीय आन्दोलन का पुरजोर समर्थन कर रही थी। जनजागृति एवं राष्ट्रीयता दो ऐसे प्रमुख तत्व थे जिनको केन्द्र में रखकर ही उस युग के नेता आगे बढ़ रहे थे। इस विचारधारा को प्रसारित करने का कार्य पत्रकारिता कर रही थी। इस काल में नेता, समाज–सुधारक या साहित्यकार स्वयं को किसी न किसी पत्रिका से सम्बद्ध बन रहे हैं। इस युग की पत्रिकाओं में भाषा, कलेवर, विचार की दृष्टि से कई बदलाव भी आए। महात्मा गाँधी ने भारतीय पत्रकारिता में सार्थक हस्तक्षेप किया है। सन् 1904 में दक्षिण अफ्रीका में अंग्रज़ी, तमिल और गुजराती भाषाओं में 'इंडियन ओपिनियन' नामक समाचार–पत्र प्रकाशित किया था। भारत में उन्होंने सन् 1919 में 'यंग इंडिया' (अंग्रेज़ी) और नवजीवन (गुजराती) तथा 11 फरवरी 1933 में 'हरिजन' नामक पत्रों का प्रकाशन प्रारंभ किया।

आधुनिक युग :

स्वतंत्रता के बाद पत्रकारिता का सिद्धान्त सूत्र राष्ट्र का पुनर्निर्माण है। पत्रकारिता में पर्याप्त प्रगति हुई और छोटे–छोटे नगरों से भी समाचार पत्र

प्रकाशित हुआ। आरंभ से आज तक हिन्दी पत्रकारिता विभिन्न बदलाव के साथ प्रगति के पथ पर है। यह एक ऐसा युग है जिसमें पत्रकार दुनिया की किसी भी घटना, खबर या सूचना को तुरन्त जनता तक पहुँचा सकता है। मानवीय मूल्यों को मान्यता देना शिक्षा के द्वारा विविध प्रकारों के विषयों की जानकारी विविध जनसंचार माध्यमों के द्वारा दी जा सकती है। एक साथ एक बड़े समुदाय में विषयगत समाचार प्रदान करने का प्रमुख साधन है। इस युग में भाषा, भाव और शैली, विचार, विवेचन एवं विविधता, जनसेवा, नवीनता एवं गंभीरता, मौलिकता, आदर्शवादिता एवं निर्भीकता की दृष्टि से दैनिक पत्रों के सामने एक नए धरातल की सृष्टि की है। पत्रकारिता के विभिन्न आयाम से यह साबित हुआ कि भयंकर चुनौतियों का सामना करके आगे अग्रसर हुआ है। दैनिक पत्र, साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक, वार्षिक आदि अनेक भाषाओं में उपलब्ध हैं। समाचार पत्रों में प्रांतीय, राष्ट्रीय, अंतराष्ट्रीय खबरे छापते हैं। इसके अलावा विभिन्न विषय जैसे शिक्षा, खेल, शेयर बाजार, यातायात, प्रौद्योगिकी, ज्योतिष आदि के बारे में समाचार पाए जाते हैं। आज कल घर बैठे–बैठे ही दुनिया में कहीं पर भी होनेवाली घटना के बारे में सूचना प्राप्त कर सकते हैं। विज्ञापन और विपणन ने तो पत्रकारिता में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। तकनीकी विकास के कारण अब रंग–बिरंगे तरीके में समाचार–पत्र लाते हैं। मुद्रण की नवीनता तथा टेक्नोलॉजी का उपयोग करके हिन्दी के प्रमुख पत्र और पत्रिकाएँ नवीनता तथा विविधता के साथ प्रकाशित होने लगे हैं।

आज का युग :

हर भविष्य अतीत की नींव पर कदम रखता है, अतीत ऐसा साँचा है, जिसमें रखकर वर्तमान अपने हाथों से भविष्य को ढालता चलता है। इस अवधारणा के

आधार पर देश की पत्रकारिता और विशेष तौर पर हिन्दी पत्रकारिता भी बहुत संस्कारवान और प्रेरणास्पद रूप में मिलती है।

पत्रकारिता साधारण जनता के लिए होती है। इसके द्वारा ही संदेश तीव्रतम गति से गंतव्य तक पहुँचाता है। यह प्रत्यक्ष रूप से जनता को संदेश देता है। इसका प्रभाव भी गहरा होता है। इसमें समाज की शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक धरोहर को वृद्धिगंत करना आदि के बारे में समाचार प्रस्तुत करते हैं।समाज की कुरीतियों, त्रुटियों एवं आडम्बरपूर्ण कार्यों का पदाफाश कर उन्हें सुधारने का दायित्व भी निभाता है। आजकल स्त्री के ऊपर होनेवाले अत्याचारों का ज्यों का त्यों प्रस्तुत कर हमें चेतावनी देती है। जहाज या हवाई जहाज दुर्घटना या भूकम्प या आक्रमण आदि से संबंधित विषय भी प्रस्तुत करते है।सम्पादकीय पक्ष में समय समय पर अपनी विशिष्ट राय और सलाह देकर हमें शिक्षित भी करता है और जनता को अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत भी करता है।

अतः पत्रकारिता का प्रथम प्रमुख कर्तव्य अन्याय का उद्‌घाटन करना विसंगतियों का सुधार करना, परामर्श देना, समाज का मार्गदर्शन करना तथा व्यक्ति–परिवार–समाज–राष्ट्र का बहुआयामी उत्थान करना होता है।

विज्ञान के रचनात्मक समाचारों को अधिक–से अधिक स्थान दिया जाए तो देश तथा जनता दोनों का उपकार होगा। परमाणु अस्त्रों, राकेटों, अर्न्तमहाद्वीपीय प्रक्षपणास्त्रों, रडार परमाणु पनडुब्बियों आदि आधुनिक आविष्कारों ने मानव सभ्यता की विचारधारा में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर दिया है। इनके बारे में हम नित्यप्रति ही समाचार पत्रों में कोई–न–कोई नई बात प्रस्तुत करते हैं।

मौसम–भविष्यवक्ताओं का उद्‌देश्य होता है कि भविष्यवाणी के आधार पर लोग आवश्यक कारवाई कर लें अथवा खतरे का सामना करने की तैयारी पहले से कर ली जाए। किसान अपनी खेती का पूरा कार्यक्रम पहले से तैयार कर सकता है। तापमान, अतिशीत, वर्षा, अनावृष्ट के आकंडों को रोज़ प्रस्तुत करते

हैं। पहाडों और समुद्रतटीय क्षेत्रों के समाचार पत्र विशेष रूप से मौसम के समाचार देकर संभावित दुर्घटनाओं के बचाव में बहुत–कुछ सहायक हो सकते हैं।भूमंड़लीकरण ने पूरी दुनिया को एक गाँव में तब्दील कर दिया है और इस गाँव की संस्कृतियों को आपस में साझा करने में पत्रकारिता की महती भूमिका है।

हमारे देश में पत्रकारिता के द्वारा शिक्षा का प्रसार हो रहा है। भूमण्ड़लीकरण और उदारीकरण के कारण आर्थिक प्रगति भी हुई है। रेडियो, दूरदर्शन, फिल्म, कम्प्यूटर आदि के विकास के साथ–साथ हिन्दी पत्रकारिता प्रगति की पथ पर अग्रसर होती जा रही है।

1.3 पत्रकारिता का विविध विषयों से संबंध :

विभिन्न विषयों से संबंधित पत्रिकाएँ	कुछ उदाहरण
साहित्यिक पत्रिकाएँ	दीवानी, मधु मुसकान, साहित्य संदेश, परम्परा, अभिनव भारती, निहारिका आदि।
सांस्कृतिक पत्रिकाएँ	कला–सुमन, संस्कृति, मालिनी, पुराकल्प, रंगयोग, लोक संस्कृति आदि।
शिक्षा संबंधी पत्रिकाएँ	भारती, भारतीय विद्या, राष्ट्रनिर्माता, नई तालीम, प्रौढ़ शिक्षा, नई शिक्षा आदि।
बाल संबंधी पत्रिकाएँ	चन्दामामा, बाल–भारती, चुन्नु मुन्नु, नुदन, लोट–पोट, चम्पक आदि
खेल संबंधी पत्रिकाएँ	क्रिकेट सम्राट, खेल भारती, खेल–खिलाड़ी, भारतीय कुश्ती, खेल युग, स्पोर्टस वीक आदि।
महिला संबंधी पत्रिकाएँ	वमा, गृहशोभा,मनोरमा, आर्य महिला, उषा, आदि।

चलचित्र संबंधी पत्रिकाएँ	चित्रलेखा, माधुरी, रस–नटराज, फिल्मी दुनिया, फिल्मी कलियाँ आदि।
उद्योग संबंधी पत्रिकाएँ	उद्यम, खादी ग्रामोद्योग, व्यापार संदेश, व्यापार उद्योग समाचार,आर्थिक जगत्, योजना आदि।
स्वास्थ्य संबंधी पत्रिकाएँ	आपका स्वास्थ्य, आयुर्वेद विकास, धन्वंतरी, स्वस्थ जीवन, डाक्टर भाई, आरोग्य आदि।
विज्ञान विषयक पत्रिकाएँ	विज्ञान–कला, विज्ञान–प्रगति, विज्ञान दूत, विज्ञान भारती, आविष्कार, लोक–विज्ञान।
कृषि पत्रिकाएँ	युवा–रश्मि, खेती–किसानी, कृषि भारती, सेवाग्राम, गोसंवर्द्धन, कृषि –दर्शन,पंजाब हार्टिकल्चर बुलेटिन आदि।
धार्मिक पत्र–पत्रिकाएँ	कल्याण, अखंड ज्योति, अष्यात्म, आर्यमित्र, भगवत दर्शन, अमर भारती, श्री सर्वेश्वर आदि।

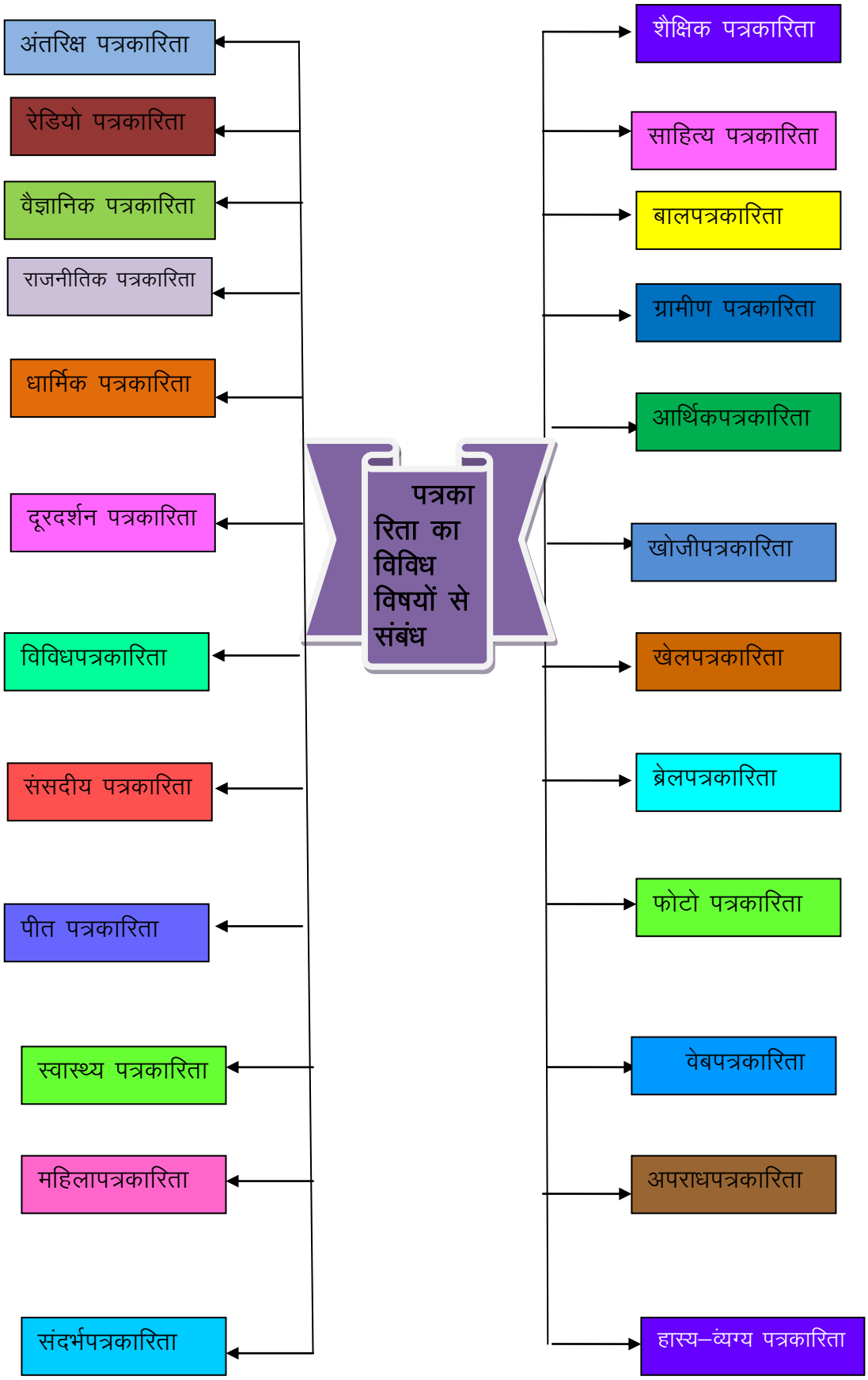
पत्रकारिता का विविध विषयों से संबंध
अंतरिक्ष पत्रकारिता
रेडियो पत्रकारिता
वैज्ञानिक पत्रकारिता
राजनीतिक पत्रकारिता
धार्मिक पत्रकारिता
दूरदर्शन पत्रकारिता
विविधपत्रकारिता
संसदीय पत्रकारिता
पीत पत्रकारिता
स्वास्थ्य पत्रकारिता
महिलापत्रकारिता
संदर्भपत्रकारिता
शैक्षिक पत्रकारिता
साहित्य पत्रकारिता
बालपत्रकारिता
ग्रामीण पत्रकारिता
आर्थिकपत्रकारिता
खोजीपत्रकारिता
खेलपत्रकारिता
ब्रेलपत्रकारिता
फोटो पत्रकारिता
वेबपत्रकारिता
अपराधपत्रकारिता
हास्य–व्यंग्य पत्रकारिता

पत्रकारिता जनमत की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। मार्ग में आने वाले कई रुकावटों पर विजय प्राप्त कर आधुनिक पत्रकारिता अपने स्वस्थ, विकसित और उन्नत स्वरूप को प्राप्त करने में सफल हुई है। पत्रकारिता जिस दिशा में अग्रसर हुई है, वह दिशा क्षेत्रीय न होकर बहुक्षेत्रीय है। जिस तरह हमारे जीवन में विविध रंग है उसी तरह पत्रकारिता के भी विविध रंग है। पत्रकारिता का संबंध एक ही विषय से नहीं है क्योंकि यह दर्पण के जैसे हैं और इसका कर्तव्य है कि वह हर चीज़ को प्रतिबिम्बित करे। मानवीय रुचियों और आवश्यकताओं के अनुसार पत्रकारिता का क्षेत्र भी बढ़ता है।

पत्रकारिता और साहित्य :

पत्र–पत्रिकाओं में साहित्य का एक विशेष पृष्ठ रहता है। भाषा संबंधी विविध विचार, काव्य, कथा, निबंध, नाटक आदि के विविध रूप–वर्ग, उनको लेकर चल रहे विचार–विमर्श, बहसें, सेमिनार, गोष्ठियाँ आदि पुस्तक समीक्षा, साहित्यिक वाद–विवाद, लेखकीय संगठन आदि के बारे में रोचक और सारसूचक जानकारी देना भी पत्रकारिता का लक्ष्य है। इससे साहित्य के विकास के साथ पत्रकारिता का विकास भी होता है। पुस्तक–समीक्षा दैनिक पत्रों के रविवारीय अंकों में तथा साप्ताहिक और पाक्षिक–मासिक आदि पत्रों के स्तंभों में प्रकाशित करते हैं। ऐसे पत्रकारिता के माध्यम से उचित प्रोत्साहन मिलता है। साहित्यिक कृतियों जो अखबारों में प्रकाशित हुई हैं वे ही समाज के उत्थान में सहयोगी साबित हुई हैं।

बालपत्रकारिता :

बालकों के लिए पत्रकारिता एक अत्यंत मनोरंजक क्षेत्र है। बालकों का मस्तिष्क कोमल होता है और उन्हें निरन्तर अपने विकास के लिए सामग्री मिलनी चाहिए। पत्रकारिता के द्वारा उनको मनोरंजन के साथ–साथ ज्ञानवर्धन एवं शिक्षाप्रद लेख प्रकाश डालते हैं। बालकों की जिज्ञासा की शान्ति के लिए

रंग–बिरंगी, उन्हीं की भाषा में, मनोरंजक रूप में पत्र–पत्रिकाएँ निकल रही हैं। बच्चों के लिए लेख तैयार करते समय कुछ मुख्य बातों का ध्यान रखना –

- बच्चों के लिए लिखे जाने वाला साहित्य रोचकता और मनोरंजन से भरपूर होना चाहिए।
- बच्चों के लिए लिखे जाने वाले साहित्य कल्पनायुक्त होना चाहिए। बच्चों की दुनिया इस कल्पनाशील दुनिया को अपने बीच पाकर उसके बारे में अधिक जानने को उत्सुक होती है। यह लेखक की कलात्मक शक्ति पर निर्भर करता है कि वह अपनी सृजनात्मक सोच किस प्रकार कल्पनात्मक रचना को जन्म देता है।
- बच्चों का मन अत्यन्त ही कोमल होता है इसलिए यह आवश्यक है कि उनके लिए लिखे जाने वाले साहित्य में संवेदना अधिक हो।
- बाल साहित्य का लेखन करते समय यह भी आवश्यक है कि वह सहज और सरल भाषा में लिखा गया हो। उसे सुनते हुए बच्चों को ऐसा महसूस न हो कि यह उसकी अपनी शब्दावली से बाहर की दुनिया की शब्दावली है। बहुत छोटे–छोटे वाक्यों का ही प्रयोग किया जाना चाहिए इन्हें सुनकर बच्चे आसानी से ग्रहण कर पाते हैं।
- पत्रकारिता में ज्ञान–अर्जन के जितने अधिक अवसर बच्चों को मिलते हैं उतने ही अधिक सृजनात्मक विकास की संभावना बना रहती है।
- 'कल्पना' बच्चों के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इससे बच्चे न केवल अपनी इच्छाओं को पूरा करते हैं परन्तु बच्चों में सीखने की प्रवृत्ति को भी जगाता है। बालक देश का भविष्य और राष्ट्र की मुस्कुराहट है। बालकों में

वर्तमान करवटें लेता है और भविष्य के बीज उसमें बोये जाते हैं। इसलिए बाल–पत्रों के पत्रकार को सर्वज्ञ और एक शुद्ध बालक होना पड़ता है।

पत्रकारिता और नारी जीवनः

नारी, समाज की आधारशिला होती हैं। महिलाओं के जीवन में समाज एवं गृहोपयोगी वस्तुओं के निर्माण के लिए पत्रिकाओं की अत्यंत आवश्यकता है। स्वतंत्रता के बाद नारी–जागरण एवं उनके चतुर्दिक् विकास के लिए पत्रकारिता निकलीं। नारी जीवन से जुड़े विषयों को लेकर बहुत से लेख, समाचार व फीचर प्रकाशित किए जाते हैं। स्त्रियों को प्रगति के पथ पर लाने का श्रेयस्कर कार्य इसके द्वारा ही संभव है। पत्रकारिता से विचारों का दायरा विस्तृत होता है साथ ही जागरूकता विकसित करने में ये सहायक होती हैं। नव–निर्माण काल की पत्र–पत्रिकाओं ने महिलाओं को सही दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

समाचार संकलन में महिलाओं का स्थान :

स्त्रियों के लिए आत्म निर्माण और जीविकोपार्जन के बहुत से अवसर प्रदान करता है। जीवन की सभी गतिविधियों और समाचार के सभी क्षेत्रों में स्त्री समुदाय का दिलचस्प होना स्वाभाविक ही है। तथापि समाचार –पत्रों के कई एक स्तम्भ स्त्रियों और बच्चों के लिए सामग्री संकलित करने में या उसे अन्तिम रूप देने में महिला पत्रकारों और रिपोर्टरों की सहायता सिद्ध हो सकती है। समान योग्यता रखते हुए भी स्त्री पुरुष पत्रकारों की अपनी–अपनी कार्य क्षमता होती है। पत्रकारिता में कई काम ऐसे हैं जो महिलायें अधिक आसानी से कर सकती हैं। समाचार संकलन में भेंटवार्ता, मेल–जोल और व्यक्तिगत पूछताछ का विशेष स्थान जिसके लिए संवाददाता या प्रेस प्रतिनिधि के तौर पर काम करना महिलाओं के लिए अधिक आसान है। वेषभूषा, शिशु पालन, बाल–शिक्षा, पकवान व्यंजन आदि विषय पर महिलाएँ आसानी से लिख देती हैं।

सत्ता और पत्रकारिता :

भारतीय संसद के दोनों सदनों, प्रादेशिक विधान सभाओं, परिषदों की कार्रवाई की रिपोर्टिंग भी पत्र–पत्रिकाओं के अन्तर्गत आती हैं। राष्ट्र की चौथी

सत्ता के प्रारूप मानी जाती है। देश–विदेश की नीतियों का निर्धारण, संस्थाओं की कार्रवाई का वर्णन आदि समाचार एजेंसियों द्वारा समाचार पत्रों तक पहुँचती हैं। राजनीतिक दलों के महत्वपूर्ण नेताओं के वक्ताओं और उनकी नीतियों का समाचार भी प्रस्तुत करते हैं।

इसका जनरुचि से गहरा सम्बन्ध है। इस दौर में पत्रकार को निष्पक्ष, तटस्थ रहकर विवेक का पूर्ण उपयोग करते हुए आगे बढ़ना चाहिए क्योंकि उनकी एक–एक पंक्ति देश में चिनगारी के रूप में कार्य करती है।

ग्रामीण विकास से जुड़ी पत्रकारिता :

हमारे देश को गाँवों का देश कहा गया है। सुदूर गाँवों में वैज्ञानिक विकास और नयी चेतना के स्वर को समाचार पत्रों द्वारा ही पहुँचाया जा रहा है।

''राष्ट्र महलों में नहीं रहता, प्रकृत राष्ट्र के निवास स्थल वे अगणित झोंपड़े हैं जो गाँवों और कस्बों में फैले हुए आकाश के देदीप्यमान सूर्य और शीतल चंद्र और तारागण से प्रकृति का संदेश लेते हैं। इसलिए राष्ट्र का मंगल और उसकी जड़ उस समय तक मजबूत नहीं हो सकती जब तक अगणित लहलहाते पौधों की ज़डों में जीवन का जल नहीं सींचा जाता।''

– गणेशशंकर विद्यार्थी[*18]

पत्रकारिता ने किसानों को कृषि की नई पद्धतियों से भी अवगत करवा दिया है। फसल चक्र की जानकारी एवं मौसम के भविष्य के आकलन के आधार पर उनकी फसलों की पैदावार के लिए जानकारी उपलब्ध करवा दी है। **ग्रामीण क्षेत्रों के लिए पत्रकारिता के लक्ष्य इस प्रकार निर्धारित किए जा सकते हैं–**

- स्वास्थ्य, चिकित्सा, परिवार नियोजन, रोग प्रतिरोधक टीकों के कार्यक्रम का प्रचार तथा इनसे जुड़े अंधविश्वासों को दूर करने का प्रयास।
- जाति प्रथा, छुआछूत तथा बंधुआ मज़दूरी प्रथा व मज़दूरों के शोषण के खिलाफ माहौल बनाना और उसे दूर करने का प्रयास करना।

समाज के बदलाव के अनुसार पत्रकारिता भी बदलती है। पत्रकारिता गतिशील है। पत्रकारिता का क्षेत्र भी व्यापक है। आम जीवन की समस्त गतिविधियाँ पत्रकारिता में शामिल है। यह एक ऐसा जीवंत संस्थान है जिसमें 'स्व' से 'पर' ज्यादा है। आधुनिक पत्रकारिता लोगों से संबंधित विविध छवियों और घटनाओं को उभारने में सहायक होती है।

1.4 पत्रकारिता एवं शिक्षा :

शिक्षा एवं पत्रकारिता का संबंध घनिष्ट है। शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए पत्रकारिता एक प्रमुख साधन है। पत्रकारिता समुद्र तुल्य है। इसमें प्रवाह है। इस सरिता में शिक्षा एक नाव जैसी है। इसकी गति अविराम है। शिक्षा में जो भी नये–आयाम हैं उसे प्रस्तुत करने के लिए पत्रकारिता एक साधन मात्र ही नहीं बल्कि एक मार्ग दर्शक के रूप में कार्य करता है। इसका प्रभाव मानव संवेदनाओं से अविरल भूमिका निभाता है और आगे बढ़कर इसका क्षेत्र भी असीम है। पत्रकारिता खासतौर पर शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिपल होनेवाले नए आयामों को उद्‌घाटित करता है।

पत्रकारिता में रक्षा, वित्त, विज्ञान, विदेश, कला, साहित्य, संस्कृति जैसे विभिन्न विषयों के समाचारों के संकलन तथा उन पर फीचर आदि लिखने के साथ ही शिक्षा पर विशेष ध्यान देते हैं। शिक्षा का क्षेत्र बहुत महत्वपूर्ण है जिसके लिए हिन्दू, दैनिक जागरण, दि टाइम्स ऑफ इण्डिया, देशबन्धु, नवभारत टाइमस, नई दुनिया, देशबन्धु, अमर उजाला, कुछ समाचार–पत्रों ने संवाददाताओं की अलग रूप से नियुक्ति की है। शिक्षा के लिए समाचार–पत्र में एक विशेष स्थान दिया है। नौकरी पाने के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में है। छात्र की रुचि के संबेध में विभिन्न तरह के शिक्षा से संबंधित ज्ञान और उसे पाने के लिए पथ भी दिखाते हैं। पत्रकारिता अपने विभिन्न स्तंभों के माध्यम से प्रचार करते हैं। पत्रकारिता शिक्षा के क्षेत्र में पैनी नज़र रखते हैं और उससे संबंधित समस्याओं

पर अपनी निष्पक्ष राय देते हैं। यह विद्यार्थियों के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं और उन्हें शिक्षा से संबंधित हर स्थिति से अवगत कराते हैं। यह शिक्षा राष्ट्रीय स्तर पर भी हो सकती है और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हो सकती है। इससे ही विश्वभर में हो रही खोज़ों आदि की भी जानकारी मिलती है। इस प्रकार की शिक्षा से नागरिक को देश प्रेम और राष्ट्रीयता का संस्कार उज्जवल होगा और उनमें स्वावलम्बन जैसा गुण भी उद्वेलित होगा। शिक्षा के लिए अलग से पत्रिकाएँ भी छापती हैं जिससे वह गंगा के समान होते हैं –

जो समाज को सिक्त और पुष्ट करते हैं।

एक स्तर पर शिक्षा और पत्रकारिता के उद्देश्यों में भी समानता है। पत्रकारिता जहाँ शिक्षा और सूचना का सार्थक माध्यम है, वहीं शिक्षा का भी यही उद्देश्य है। **अगर पत्रकारिता सामाजिक परिवर्तन का सशक्त हथियार है तो शिक्षा भी मानव विकास में और उसे ''सभ्य'' बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।** शिक्षा संबंधी प्रवृत्तियों के बारे में समाचार, लेख, शिक्षा–जगत की अन्य गतिविधियों से मीड़िया के माध्यम से जनता को परिचित कराने का कार्य पत्रकारिता का ही है। प्रारंभ में हमारे देश में सारी शिक्षा अंग्रेज़ी माध्यम में दी गयी थी।अब देश में सभी भाषाओं में पत्रकारिता के द्वारा भी शिक्षा दी जाने लगी है और इससे व्यक्तित्व विकास के साथ पत्रकारिता के स्तर एवं पाठ्य सामग्री आदि में भी व्यापक सुधार हुआ है। पाठकों में भी शिक्षा, जागृति, आर्थिक विकास के बारे में जानने की इच्छा का विस्तार हुआ है। इससे बौद्धिक स्तर में उत्थान और परिष्कार भी हुआ है।

शैक्षणिक समाचार का आशय उन समाचारों से है, जो शिक्षा के विविध आयामों से जुड़े हुए हैं। जनता को विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय, छात्रसंघ के चुनाव, वाद–विवाद प्रतियोगिता, गोष्ठियाँ, परीक्षाफल, विश्वविद्यालय की सिंडीकेट की कार्यवाही के समाचार, शिक्षा में हो रहे परिवर्तन, विश्वविद्यालय अनुदान

आयोग (यू.जी.सी) की समय–समय पर घोषित नीतियाँ, स्कूल–कॉलेज–विश्वविद्यालय के लिए शिक्षा से संबंधित विषय, कर्मचारियों की माँगों के समर्थन में आयोजित हड़तालों के समाचार, शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश संबंधी धरने आदि विषय जानने के लिए भी पत्रकारिता एक सहायक के रूप में काम करता है।

शैक्षिक पत्रकारिता, पत्रकारिता का वह सकारात्मक पक्ष है जिसके समुचित विकास से समाज में वैचारिक चेतना के विकास के साथ ही शिक्षण संस्थानों के छात्र–अध्यापक समुदाय में भी आपसी सौहार्द तथा समझ का वातावरण विकसित होगा। शिक्षा संस्थानों में अन्तर्सम्बन्ध कायम करने का यह सशक्त माध्यम बन सकता है तथा इसके माध्यम से उच्च शिक्षा के आगमन तक पहुँचाया जा सकता है। शैक्षिक पत्रकारिता देश के विकास का एक कड़ाकड साधन है। आजकल बहुत संख्या में यह पत्र निकल रहा है। सरकार भी निकाल रही है। N.C.E.R.T,National Council of Educational Research and Training , राज्य शैक्षिक तकनीकी संस्थान, साक्षरता निकेतन आदि संस्थाएँ मुख्य हैं। संगोष्ठी और वर्कशाप भी हुआ करते हैं।

स्वतंत्रता के पहले हमारे नेताओं का उद्देश्य स्वतंत्रता प्राप्त करने की ओर था और उसके बाद राष्ट्र–निर्माताओं का ध्यान राष्ट्र के विकास और शिक्षा के प्रसार की ओर हो गया। पत्रकारों ने शिक्षा में आमूल– चूल परिवर्तन की बात उठाई। बुनियादी शिक्षा, व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए नया शिक्षक, नई तालीम, प्रौढ़ शिक्षा, भारतीय विद्या, राष्ट्रनिर्माता प्रकाशित हुई। उसके बाद कैरियर, परीक्षा–पद्धति आदि विषयों पर चर्चा करती है। शैक्षिक पत्रकारिता के अंतर्गत शिक्षा से जुड़े लेख, समाचार व विश्लेषण प्रस्तुत किए जाते हैं। देश के विकास में शिक्षा की भूमिका अहम होती है, इसलिए शैक्षिक पत्रकारिता का महत्व बहुत बढ़ जाता है। शैक्षिक पत्रकारिता शिक्षा –क्षेत्र से जुड़ी समस्याओं, शिक्षा के व्यवसायीकरण, बस्तों के बढ़ते बोझ,

शिक्षा के बाद कैरियर, परीक्षा–पद्धति आदि विषयों पर भी समाचार प्रस्तुत करते हैं। देश में बेहतर शिक्षा पद्धति लागू करने के लिए और वर्तमान शिक्षा पद्धति की कमियों को दूर करने के लिए यह शिक्षा जगत से जुड़े अधिकारियों व शिक्षकों के बीच संवाद स्थापित करती है। जिन भारतीय परिवारों या ग्रामीण समाज में माता–पिता अशिक्षित हैं अथवा अपने बच्चों को केरियर सेसंबंधित दिशा निर्देश नहीं दे पाते। छात्र बारहवीं कक्षा के बाद क्या करें, क्या न करें की ऊहापोह में फंस जाते हैं या फिर डिग्रियाँ लेकर जूतियाँ चटकाते हैं इससे बचने के लिए संबंधित सुझाव पत्रकारिता में देते हैं। ऐसे छात्रों को उचित मार्गदर्शन देना भी इसी पत्रकारिता से जुड़ा है।

सारांश रूप में यह बता सकते हैं कि पत्रकारिता मनुष्य के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आज का युग पत्रकारिता का युग है। पत्रकारिता के उद्देश्यों में जनता को शिक्षित करना और सही मार्गदर्शन करना एक प्रमुख उद्देश्य है। पत्रकारिता के विभिन्न विषयों के साथ राष्ट्र की सुरक्षा, साम्प्रदायिक एकता और सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना भी एक महत्वपूर्ण अंग है। पत्रकारिता समाज के प्रत्येक घटक को संस्कारशील और विचारशील बनाती है। यह उचित–अनुचित,विकार–अविकार, स्वीकार्य– अस्वीकार्य, ग्राह्य–अग्राह्य का सम्यक् विश्लेषण स्थापित कराती है।

संदर्भ एवं सहायक ग्रंथ सूची ——प्रथम अध्याय

*[1]आधुनिक पत्रकारिता, डॉ . अर्जुन तिवारी, पृ.सं. 2

*[2] हिन्दी पत्रकारित आज के संदर्भ में , गीता डोगरा, पृ.सं. 24

*[3] पत्रकारिता : समस्या और समाधान, डॉ. यू. सी गुप्ता, पृ.सं. 2

*[4]पत्रकारिता : एक परिचय, डॉ. मधुधवन पृ.सं.2

*[5]जनसंचार और हिन्दी पत्रकारिता , डॉ. अर्जुन तिवारी पृ.सं.50

*[6]प्रयोजनमूलक हिन्दी, डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, डॉ.प्रमिला अवस्थी, पृ.सं. 115

*[7]खोजी पत्रकारिता , डॉ. हरिमोहन एवं हरिशंकर जोशी , पृ.सं.13

*[8] पत्रकारिता के विविध आयाम,डॉ. राजेन्द्र मिश्र, डॉ. देवीसिंह राठौर, पृ.सं.113

*[9]पत्रकारिता : एक परिचय, संदीप कुमार श्रीवास्तव, पृ.सं. 86

*[10] हिन्दी पत्रकारिता का स्वरूप, डॉ.गोविन्द प्रसाद, पृ.सं.2

*[11] पत्रकारिता का इतिहास, एन.सी. पंत, पृ.सं. 263

*[12] आधुनिक पत्रकारिता, डॉ.अर्जुन तिवारी, पृ.सं. 1

*[13] पत्रकारिता एक परिचय, डॉ.मधुधवन, पृ.सं. 8

*[14] पत्रकारिता प्रशिक्षण एवं प्रेस विधि, डॉ. सुजाता वर्मा, पृ.सं. 48

*[15] हिन्दी पत्रकारिता का स्वरूप, डॉ.गोविन्द प्रसाद, पृ.सं. 14

*[16]समाचार संकल्पना एवं अनुवाद, अमी आधार 'निडर' , पृ.सं. 13

*[17] पत्रकारिता के विविध आयाम, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, डॉ. देवीसिंह राठौर,पृ.सं. 216

*[18]प्रयोजनमूलक हिन्दी, डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय,डॉ. प्रमिला अवस्थी, पृ.सं.121

❖ आर्थिक पत्रकारिता, आलोक पुराणिक, प्रभात प्रकाशन, 4/19, आसफ अली रोड, नई दिल्ली– 110 002

❖ आधुनिक पत्रकारिता प्रभाव एवं कार्य, विजय शर्मा, अशिका पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2011

❖ जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता सर्वांग , डॉ. जितेन्द्र वत्स, डॉ. किरणबाला, अमर प्रकाशन, उत्तर प्रदेश, 2009

- आधुनिक हिन्दी साहित्य में जनवादी चेतना, विद्याश्री, अमन प्रकाशन, कानपुर–12, 2010
- खेल पत्रकारिता, संशील दोषी, सुरेश कौशिक, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, जी– 17, जगतपुरी, दिल्ली – 110 051, 2003
- पत्रकारिता का संसार और हिन्दी उपन्यास, डॉ. षीना मनोज, जवाहर पुस्तकालय, हिन्दी पुस्तक प्रकाशन एवं वितरक, मथुरा, उत्तर प्रदेश, 2011
- पत्रकारिता के बदलते तेवर, डॉ. वसुंधरा मिश्र, इन्स्टीट्यूट ऑफ मीडिया मैनेजमेंट, बीकानेर, 2008
- पत्रकारिता और साहित्य, डॉ. शान्ति विश्वनाथन, जवाहर पुस्तकालय, हिन्दी पुस्तक प्रकाशन एवं वितरक, मथुरा, 2009
- पत्रकारिता प्रशिक्षण, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, राकेश शर्मा, तक्षशिला प्रकाशन, 2004
- भारत में पत्रकारिता, आलोक मेहता, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, 2006